Publication: Saamana
Date: 4/5/2019
Page: 4
Column: 3-5

दोपहर का सामना
www.hindisaamana.com
शनिवार ४ मई २०१९

७१ वर्षों बाद जगमगाया जामझाड़पाड़ा

सामना संवाददाता / मुंबई

मुंबई से सटे गोराई में एक आदिवासी गांव के परिवार वर्षों से बिजली देखने का इंतजार कर रहे थे। आखिरकार ७१ वर्षों के लंबे इंतजार के बाद गांव में बिजली पहुंच गई। अदाणी इलेक्ट्रिसिटी मुंबई लिमिटेड ने जामझाड़पाड़ा गांव में जब से बिजली के तार डालना आरंभ किया था। तब से इस गांव के लोगों को अपने घरों में बल्ब की रोशनी देखने की आस जगी थी। पिछले सप्ताह यहां विद्युतीकरण का काम पूरा कर लिया गया और शुक्रवार से यहां बिजली आपूर्ति शुरू कर दी गई है।

ज्ञात हो कि देश को आजाद हुए ७१ वर्ष हो गए। मगर आज भी कई ऐसे गांव हैं, जो मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। इस गांव में आज तक बिजली भी नहीं पहुंची है। ऐसा ही एक गांव मेट्रो सिटी मुंबई और मीरा-भाइंदर शहर के बीच बसा हुआ जामझाड़पाड़ा गांव है। यह गांव बोरीवली विधानसभा क्षेत्र के अधीन आता है लेकिन जमीनी रूप से यह भाइंदर-पश्चिम से जुड़ा हुआ है।

जामझाड़पाडा भाइंदर-गोराई रोड पर पड़ता है, जहां जाने के लिए केशव सृष्टि के किशन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम के पास से जाना पड़ता है। वानप्रस्थाश्रम के पास से सर्पाकार पहाड़ियों से होते हुए करीब २ किलोमीटर का सफर तय कर जामझाड़पाड़ा पहुंचा जा सकता है।

सामना इम्पैक्ट

इस आशय की खबर 'न बिजली न पानी, भाइंदर के एक गांव की कहानी' शीर्षक से 'दोपहर का सामना' के २१ अक्टूबर २०१८ के अंक में सर्वप्रथम प्रमुखता से प्रकाशित की गई थी। स्थानीय समाजसेवी अनिल नौटियाल ने भी सोशल मीडिया पर इस गांव में बिजली के लिए जोर-शोर से मुहिम चलाई थी। इसके बाद बिजली विभाग हरकत में आया और आखिरकार इस गांव में बिजली पहुंच गई, वहीं ५० घरोंवाला यह गांव आज भी कई मूलभूत सुविधाओं से वंचित है।